

नेक बनने का नुस्खा

पन्दरहवीं सदी की अंग्रीज इल्मी व स्लहानी शाखियाव्यत
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

जेल के कैंसियों
के लिये

मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी ر-ज़वी ابن ابي جعفر
ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के
तरीक़ों पर मुश्तमिल शरीअतो तरीक़त का जामेअ मज्मूआ

52 म-दनी इन्अामात

52 Madani In-aamaaT (Hindi)

ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं । इन के
मुताबिक़ आसानी से अमल करने का तरीक़ए कार
आखिर में दिया गया है । मज़ीद मा'लूमात के लिये
मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से किताब

जनत के तलब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता तलब फ़रमा सकते हैं ।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी) حَسَنَةُ الدِّينِ
रा-भरो इस्लामी

(52 म-दनी इन्डिया)

ये ही रिसाला (52 म-दनी इन्डिया)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी र-ज़वी ذامَتْ بِرَبِّكَاهُمُ الْعَالِيَّ ने उर्दू ज़बान में तह्रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाए़अ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (बज़रीअ-ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

म-दनी वज़ाहतें

म-दनी इन्धामात की वज़ाहतों और रिअयतों से मु-तअल्लिक सुवालात के जवाबात के लिये तन्जीमी तौर पर चार क़ाइदे मुक़र्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : बा'ज़ म-दनी इन्धामात चन्द “जु़़़िय्यात” पर मुश्तमिल हैं।

म-सलन : तहज्जुद, इशराक़, चाशत, अब्वाबीन वाला म-दनी इन्धाम, इस म-दनी इन्धाम में 4 जुज़ हैं, लिहाज़ा ऐसे म-दनी इन्धामात पर अक्सर पर अ़मल होने की सूरत में तन्जीमी तौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।

(अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा म-सलन 100 में से 51 अक्सर कहलाएगा)

क़ाइदा नम्बर 2 : बा'ज़ म-दनी इन्धामात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अ़मल न होने की सूरत में तन्जीमी तौर पर दूसरे दिन अ़मल की तरगीब है।

म-सलन : चार सफ़हात फैज़ाने सुन्त, 313 बार दुर्दे पाक पढ़ने या कन्जुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम 3 आयात की तिलावत (मअ़ तरजमा व तफ़सीर) करने से महरूमी रही। इस सूरत में जितने दिन नाग़ा हुवा, बा'द वाले दिनों में रह जाने वाले दिनों का

हिसाब लगा कर उतनी ही मर्तबा अ़मल करने पर तन्जीमी तौर पर अ़मल मान लिया जाएगा ।

क़ाइदा नम्बर 3 : बा'ज़ म-दनी इन्धामात ऐसे हैं जिन पर अ़मल की आदत बनाने में वक्त लगता है ।

म-सलन : क़हक़हा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आदत बनाने वाले इन्धामात, ऐसे म-दनी इन्धामात पर ज़मानए कोशिश के दौरान अ़मल मान लिया जाएगा । (कोशिश पाए जाने के लिये ज़रूरी है कि कम अज़ कम दिन में 3 दफ़ा अ़मल करे)

क़ाइदा नम्बर 4 : बा'ज़ म-दनी इन्धामात ऐसे हैं जिन पर सहीह उज्ज़ (या'नी ह़कीकी मजबूरी) की बिना पर अ़मल की कोई सूरत न हो तो भी तन्जीमी तौर पर इन पर अ़मल मान लिया जाएगा ।

यौमिय्या 41 म-दनी इन्हामात

पहला द-रजा 14 म-दनी इन्हामात

(1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरगीब दिलाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(2) क्या आज आप ने पांचों नमाजें पढ़ीं ? नीज़ हर नमाज़ पढ़ने से पहले किसी एक मुसल्मान कैदी को (नरमी के साथ) नमाज़ की दावत दी ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(3) क्या आज आप ने नमाजे पन्जगाना के बाद नीज़ सोते वक्त कम अज़ कम एक एक बार आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख्लास और तस्बीहे फ़ातिमा (رضي الله تعالى عنها) पढ़ी ? नीज़ रात में सू-रतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(4) क्या आज आप ने अज़ान की आवाज़ सुनने पर बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, वगैरा तमाम कामकाज मौकूफ़ कर के अज़ान व इक़ामत का जवाब दिया ? (अगर पहले से खा पी रहे हों और अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकते हैं)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(5) क्या आज आप ने आते जाते या सलाम करने के मवाकेअ़ पर खड़े या बैठे हुए मुसल्मानों को सलाम किया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(6) आज आप ने हर छोटे बड़े को तू कह कर मुख़ातब किया या आप कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ्त-गू “हैं” कह कर बातचीत की या “जी” कह कर ? (आप और जी कहना दुरुस्त जवाब है)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(7) **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** के मा'ना हैं “अल्लाह ने चाहा तो” और अहंदीस में इस के बोलने की तरगीब है क्या आप ने पक्के इरादे के साथ हर जाइज़ बात पर नियत करते वक्त **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** का पाकीज़ा जुम्ला बोला कि नहीं ? और किसी की तरफ से तबीअत मा'लूम करने पर शिकवा करने की बजाए **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ** (या'नी हर हाल में अल्लाह का शुक्र है) और किसी ने 'मत को देख कर **مَا شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** (या'नी जो अल्लाह उर्ओज़ की मरज़ी) कहा ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(8) क्या आज आप ने हर मर्तबा सलाम का जवाब इतनी बुलन्द आवाज़ से दिया कि सलाम करने वाले ने सुन लिया ? और छोंकने वाले के **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** कहने पर भी फैरन इतनी आवाज़ से जवाबन **يَرَحْمَكَ اللَّهُ** कहा कि उस ने सुन लिया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(9) क्या आज आप ने हाथ धो कर सुन्नत के मुताबिक बैठ कर मअ़ पर्दे में पर्दा, बिस्मिल्लाह और दुआएं पढ़ कर खाना खाया ? नीज़ पेट का कुफ्ले मदीना लगाने (या'नी ख़ाहिश और भूक से कम खाने) की कोशिश फ़रमाई ? (ज़हे नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट पेट पर पथर बांधने की सआदत नसीब हो जाए)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(10) क्या आज आप ने फैज़ाने सुन्नत से दो दर्स (मस्जिद/बेरेक में) दिये या सुने ? क्या आज आप ने कम अज़ कम **313** मर्तबा दुरुद शरीफ पढ़ लिया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(11) क्या आज आप ने मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ा या पढ़ाया ? नीज़ दिन का अक्सर हिस्सा बा बुज़ू रहे ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(12) क्या आज आप ने 12 मिनट मक-त-बतुल मदीना की मत्थूआ़ किसी इस्लाही किताब और फैज़ाने सुनत से तरतीब वार कम अज़ कम चार सफ़हात (दर्स के इलावा) पढ़ या सुन लिये ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(13) क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुहा-सबा) करते हुए जिन जिन "म-दनी इन्डिया" पर अमल हुवा उन की रिसाले में ख़ाना पुरी फ़रमाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(14) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से कृष्ण) सलातुत्तौबा पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ खुदा न ख्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ैरन तौबा कर के आयन्दा वोह गुनाह न करने का अहंद किया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

दूसरा द-रजा 14 म-दनी इन्हामात

(15) क्या आज आप ने नींद से फ़रागत के बा'द बिस्तर और उतारने के बा'द लिबास तह कर के रखा ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(16) क्या आज आप ने फ़ज़्र, ज़ोहर, अ़सर और इशा की सुन्नते क़ब्लिया (जमाअत शुरूअ़ होने से क़ब्ल) नीज़ फ़ज़्रों के बा'द वाले नवाफ़िल अदा फ़रमाए ? (नवाफ़िल दर्सों बयान के बा'द भी पढ़ सकते हैं)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(17) क्या आज आप ने नमाजे तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन अदा फ़रमाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(18) क्या आज आप ने कन्जुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तरजमा व तफ़सीर) तिलावत करने या सुनने की सआदत हासिल की ? नीज़ कम अज़ कम एक एक बार तहिय्यतुल वुजू और तहिय्यतुल मस्जिद अदा फ़रमाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(19) क्या आज आप ने कम अजू कम दो कैदी इस्लामी भाइयों को इन्फ्रादी कोशिश के ज़रीए मद्रसे में पढ़ने और म-दनी इन्डिया पर अमल करने की तरगीब दिलाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(20) क्या आज आप ने जेल के क्वानीन पर अमल करते हुए इन्तिज़ामिया के साथ (शरीअत के दाएरे में रह कर) तआवुन किया या नहीं ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(21) आज आप ने कहीं दूसरों की चीजें म-सलन (चादर, क़लम वगैरा) बिग्रेर इजाज़त ले कर इस्ति'माल तो नहीं कीं ? (सिर्फ़ अपनी चीजें इस्ति'माल कीजिये और ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब हिफ़ाज़त रखिये और दूसरों को भी इस की तरगीब दें ताकि अश्या के मिल जाने पर मालिक का तअ्युन करना मुम्किन हो)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(22) किसी मुसल्मान से बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह की ज़रूरत महसूस हो तो तहरीरी तौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज्हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(23) क्या आज आप ने पर्दे में पर्दा किया ? और सर को ढांपने के लिये टोपी पहनने का मा'मूल बनाया ? नीज़ बैठने में अक्सर किल्ला रू रहने की सुन्त अदा करने की सआदत पाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(24) आज आप ने किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर गुस्से का इलाज फ़रमाया या बोल पड़े ? नीज़ दर गुज़र से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ ढूँडते रहे ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(25) आज आप ने किसी से ऐसे फुजूल सुवालात तो नहीं किये जिन के जरीए मुसल्मान उम्ममन झूट के गुनाह में मुबला हो जाते हैं ? (म-सलन ये ह पूछना कि आप मेरी बात का बुरा तो नहीं मानते ? या आप मुझ से नाराज़ तो नहीं ?)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(26) क्या आज आप T.V. पर फ़िल्में, डिरामे और गाने बाजे या गुनाहों भरी ख़बरें देखने या सुनने से बचे ? नीज़ आंखों की हिफ़ाज़त की आदत बनाने के लिये सोने के अवक़ात के इलावा कम अज़ कम 12 मिनट आंखें बन्द रखीं ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(27) आज आप ने तोहमत लगा कर या किसी भी तरह किसी मुसल्मान की इज़ज़त तो ख़राब नहीं की ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(28) आज आप ने कम अज़ कम एक रिसाला पढ़ा या सुना ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

तीसरा द-रजा 13 म-दनी इन्डिया

(29) आज आप ने दूसरे की बात इत्मीनान से सुनने के बजाए उस की बात काट कर कहीं अपनी बात तो शुरूअ़ नहीं कर दी ? नीज़ बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़ा : हैं ? जी ? या क्या ? वग़रा बोल कर या अबू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हूमत तो नहीं दी ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(30) क्या आज आप ने सदाए मदीना लगाई ? (इस्लामी भाइयों को फ़ज़्र की नमाज़ के लिये जगाना सदाए मदीना कहलाता है)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(31) क्या आज आप को झूट, ग़ीबत, चुग़ली, हसद, तकब्बुर और वा 'दा खिलाफ़ी और दीगर मोहलिकात (ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों) से बचने में काम्याबी हासिल हुई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(32) कर्जदार होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तिताअत) कर्ज ख़ाह की इजाजत के बिंगेर आप ने कर्ज की अदाएगी में कहीं ताखीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आरिय्यतन (या'नी आरिज़ी तौर पर) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुकर्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(33) आज आप ने किसी मुसल्मान के उँगल पर मुत्तलअ हो जाने पर उस की पर्दा पोशी फ़रमाई या (बिला मस्लहते शर-ई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिंगेर उस की इजाजत) दूसरों को बता कर ख़ियानत तो नहीं की ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(34) आप ने (बिला मस्लहते शर-ई) किसी एक या चन्द से ज़ाती दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ यक्सां तअल्लुक़ात रखे हैं ? (मुशा-हदा येही है कि फ़ी ज़माना उमूमन ज़ाती दोस्तियां और ग्रूप बन्दियां तन्ज़ीमी कामों की तरक्की में रुकावट बनती हैं)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(35) क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ के दौरान खुशूओं खुजूओं पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ में हाथ उठाने के आदाव का लिहाज़ रखा ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(36) क्या आज आप ने ज़बान का कुफ़ले मदीना लगाते हुए फुजूल गोई से बचने की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम चार बार लिख कर बात की ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(37) क्या आज आप ने मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़ बाज़ी, दिल आज़ारी और क़हक़हा लगाने (या'नी खिलखिला कर हँसने) से बचने में काम्याबी हासिल की ? किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ ? (किसी को सुवर, गधा, चोर, लम्बू, ठिंगू वगैरा न कहा करें बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान का दिल दुखाना कबीरा गुनाह है)

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(38) क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ्त-गू भी कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ फुज़ल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ौरन नादिम हो कर जिक्रो अज्ञकार किया या कम अज़ कम एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लिया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(39) क्या आप ने चेहरे पे दाढ़ी सजाई ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(40) आज आप ने किसी से गाली गलोच, लड़ाई झगड़ा तो नहीं किया ? नीज़ जेल के माहोल को साज़गार बनाने की कोशिश की ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

(41) क्या आप ने अपने कपड़ों, बदन, बिस्तर और अपने बेरेक में सफ़ाई का ख़्याल रखा ? नीज़ आप ने (शरीरअंत के दाएरे में रहते हुए) जेल इन्तिज़ामिया के साथ तआवुन किया ?

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | मीज़ान |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

कुफ्ले मदीना कारकर्दगी म-दनी माह व साल.....

| तारीखः | लिख कर गुप्त-गू | इशारे से गुप्त-गू | निगाहें गाड़े बिगैर गुप्त-गू | कुफ्ले मदीना ऐनक का इस्ति'माल |
|--------|---------------------|----------------------|---------------------------------|----------------------------------|
| | कम अज़ कम 12 मर्तबा | कम अज़ कम 12 मर्तबा | कम अज़ कम 12 मर्तबा | कमो बेश 12 मिनट |
| 1 | | | | |
| 2 | | | | |
| 3 | | | | |
| 4 | | | | |
| 5 | | | | |
| 6 | | | | |
| 7 | | | | |
| 8 | | | | |
| 9 | | | | |
| 10 | | | | |
| 11 | | | | |
| 12 | | | | |
| 13 | | | | |
| 14 | | | | |
| 15 | | | | |

| | | | | |
|------------|-----------------------|-----------------------|---------------------------------|---------------------------------|
| तारीखः | लिख कर गुफ्त-गू | इशारे से गुफ्त-गू | निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू | कुफ्ले मदीना ऐनक का इस्त'माल |
| | कम अज़्य कम 12 मर्तबा | कम अज़्य कम 12 मर्तबा | कम अज़्य कम 12 मर्तबा | कमो बेश 12 मिनट |
| 16 | | | | |
| 17 | | | | |
| 18 | | | | |
| 19 | | | | |
| 20 | | | | |
| 21 | | | | |
| 22 | | | | |
| 23 | | | | |
| 24 | | | | |
| 25 | | | | |
| 26 | | | | |
| 27 | | | | |
| 28 | | | | |
| 29 | | | | |
| 30 | | | | |
| मज्जमूर्दः | | | | |

हफ्तावर 2 म-दनी इन्डियामात

(42) क्या आप ने इस हफ्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा ?

(43) क्या आप ने इस हफ्ते कम अज़ कम एक कैदी इस्लामी भाई की ग़म ख़्वारी की ?

माहाना 3 म-दनी इन्डियामात

(44) इस माह की पहली पीर शरीफ़ को रिसाला “ख़ामोश शहज़ादा” का मुता-लआ फ़रमा कर फुजूल गोई से बचने की आदत बनाने के लिये 25 घन्टे का कुफ़ले मदीना लगाया ? नीज़ क्या आप ने पिछले महीने का म-दनी इन्डियामात का रिसाला पुर कर के अपने उस्ताद को जम्भ करवाया ?

(45) क्या आप ने बालिग़, ना बालिग़ व ना बालिग़ा के जनाज़े की दुआएं छ कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, तकबीरे तशरीक़ और तल्बिया (या'नी लब्बैक) येह सब तरजमे के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये ?

(46) क्या आप ने अज्ञान और इस के बाद की दुआ कुरआन शरीफ की आखिरी दस सूरतें, दुआए कुनूत, अन्तहित्यात, दुर्लभे इब्राहीम और कोई एक दुआए मासूरा ये ह सब मखारिज से हुरूफ की दुरुस्त अदाएगी के साथ जबानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) ये ह सब पढ़ लिये हैं ?

सालाना 6 म-दनी इन्डियामात

(47) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّحِيمِ की आखिरी तस्नीफ मिन्हाजुल आबिदीन से तौबा, इख्लास, तक्वा, ख़ौफ़ व रजा, उज्ज्व व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की हिफ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(48) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा बहारे शरीअत हिस्सा 9 से मुरतद का बयान, हिस्सा 16 से ख़रीदे फ़रोख़त का बयान, वालिदैन के हुकूक का बयान, (अगर शादी शुदा हैं तो) हिस्सा 7 से महरमात का बयान और हुकूकुज़ज़ौजैन हिस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(49) क्या आप ने मखारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कम अज़ कम एक बार कुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म कर लिया है ? और इसे इस साल दोहरा लिया ?

(50) क्या आप ने آ'ला حَمْدُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की किताब तम्हीदुल ईमान मअ हाशिया ईमान की पहचान नीज़ मक-त-बतुल मदीना की मत्खूआ किताबें कुफ्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब और चन्दे के बारे में सुवाल जवाब पढ़ या सुन ली हैं ?

(51) क्या आप ने नमाज़ के अह़काम से नमाज़, वुजू, गुस्ल और तयम्मुम का तरीक़ा पढ़ या सुन लिया है ? और नमाज़ दुरुस्त कर के अपने उस्ताद साहिब को सुना दी है ?

(52) क्या आप ने येह रसाइल (जुल्म का अन्जाम, गुस्से का इलाज, अपद पसन्दी की तबाह करियां, मैं सुधरना चाहता हूं गुनाहों का इलाज, तौबा की रिवायात व हिकायात, वालिदैन के हुकूक, एहतिरामे मुस्लिम, खुदकुशी का इलाज, बा हया नौ जवान, क़ब्र की पहली रात, क़ियामत का इम्तिहान) पढ़ या सुन लिये हैं ?

“या रब्बे करीम ! हमें मुत्तकी बना” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में “म-दनी माहोल” बनाने के 19 म-दनी फूल

(1) घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये । (2) वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता’जीमन खड़े हो जाइये । (3) दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाठं चूमा करें । (4) वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरागिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये । (5) इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो खिलाफ़े शर-अ़ न हो फैरन कर डालिये । (6) सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मसख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहसें करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रवव्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये । (7) घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो غُرُورِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِنْ شَاءَ اللَّهُ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी । (8) मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुखातिब हों । (9) अपने महल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअत के वक्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअत) मुयस्सर आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो । (10) घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़ने ग़ालिब है कि आप की

नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो/वीडियो केसिटें सुनाइये । म-दनी चेनल दिखाइये । بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ “म-दनी नताइज़” बरआमद होंगे । (11) घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र, सब्र और सब्र कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “म-दनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मजीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख्ती करने से बसा अवकृत शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है । (12) म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना फैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये । (13) अपने घर वालों की दुन्या व आखिरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّدُعْنَاءُ سَلَّمُ الْمُؤْمِنِ या’नी दुआ मोमिन का हथियार है ।”

(14) (الْمُسْتَدِرُكُ لِلْحَلْمِ) حديث ١٦٢ مص ١٤٥٥) سुسرا ل में रहने वालियां जहां घर का जिक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का जिक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शर-ई न हो । (15) मसाइलुल कुरआन सफ़हा 290 पर है : हर नमाज़ के बाद येह दुआ अब्वल व आखिर दुरूद शरीफ के साथ एक बार पढ़ लीजिये، إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल क़ाइम होगा । (दुआ येह है :) (اللَّهُمَّ رَبَّنَا هُبْ لَنَا مِنْ أَذْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قَرْبَةً أَعْيُنٍ وَاجْعَنْنَا لِلْمُسْتَقِينَ إِمَامًا ۝) (آياتे करआनी का हिस्सा नहीं) ۱

۱ : تر-ج-مَادِيَّةِ کَنْجُولِ إِيمَانٍ : اے ہمارے رہب ہمے دے ہماری بیبیوں اور ہماری اُلَّاَد سے آنکھوں کی ٹنڈک اور ہمے پرہے ج گاروں کا پेशوا بننا । (۷۴، الفرقان ۱۹۷)

(16) ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 से 21 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले :

^١بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طَبْلُ هُوْقُّ أَنْ مَجِيدٌ فِي تُورْحَمْ حَمْفُوْظٌ (अव्वल, आखिर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है खुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी अपने शोहर पर येह अ़मल न करे ।

(17) नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज़्र के बा'द आस्मान की तरफ़ रुख़ कर के “يَا شَهِيْدٍ” 21 बार पढ़िये । (अव्वल व आखिर, एक बार दुरूद शरीफ़) (18) म-दनी इन्धामात के मुताबिक़ अ़मल की आदत बनाइये, और घर के जिन अफ़राद

के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और हिक्मते अ-मली के साथ म-दनी इन्धामात का निफ़ाज़ कीजिये, अल्लाह की रहमत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा ।

(19) पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में आशिक़ने रसूल के साथ सुनतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ कीजिये । म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में म-दनी माहोल बनने की “म-दनी बहारें” सुनने को मिलती हैं ।

1 : تَرَ-ج-مَاءِ كَنْجُولَ إِيمَانٌ : بल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफूज़ में ।

کارکردگی براۓ ریزاۓ رکھوں انام کے کام

(1) इस माह के अक्सर दिनों में मज़कूरा म-दनी इन्ड्यामात पर अमल की कोशिश रही ?

(2) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज् कम 12 मर्तबा लिख कर गुफ्त-गू फरमाई ?

(3) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज् कम 12 मर्तबा इशारे से गुफ्त-गू फरमाई ?

(4) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज् कम 12 मर्तबा चेहरे पर निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू की कोशिश फरमाई ।

(5) इस माह के अक्सर दिनों में कम अज् कम 12 मिनट कुफ्ले मदीना का ऐनक इस्ति'माल फरमाया ?

(6) इस माह आप ने अमीरे अहले सुन्नत ذافٹ بر کائِنْهُمْ الْعَالِيَهُ के कितने रसाइल का मुता-लआ फरमाया ?

पहला हफ्ता

तीसरा हफ्ता

दसरा हफ्ता

चौथा हप्ता

कल ता'दाद

(7) इस माह 52 म-दिनी इन्ड्रामात में से कितने पर अमल की कोशिश रही ?

(8) इस माह कितने दिन फिले मदीना की सआदत हासिल की ?

अमल करने का आसान तरीका

रिसाले में हर म-दनी इन्हाम के नीचे 30 दिनों के खाने दिये गए हैं। रोजाना वक्ते मुकर्रग पर फ़िक्रे मदीना (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाने पुर करने का सिल्सला) कीजिये जिन म-दनी इन्हामात पर अमल की सआदत मिली, नीचे खाने में (ك) का निशान वरना (O) बना दीजिये إِنَّ مَكَانَةَ الْمَرْءِ مِنْهُ व तदरीज अमल में इजाफे के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफरत पाएंगे।

हड्डीसे पाक में है : (आखिरत के मुआ-मले में) घड़ी भर गौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है।

(الجامع الصغير للرسوطن ، الحديث 5897 ص 365 دار الكتب العلمية بروت)

दुआए अन्तार : या अल्लाह ! غُرَّ حُلْ ! जो हर माह तेरी रिज़ा के लिये म-दनी इन्हामात पर अमल कर के रोजाना इस रिसाले में दिये गए खाने पुर कर के अपने जैली मुशा-वरत के निगरान को जम्म करवाए तू उस के अमल में इस्तकामत अता फ़रमा कर उस को अपना मक्कूल बन्दा बना ले।

म-दनी माह..... 14 सि.हि.

नाम मअ् वल्दिय्यत..... उम्र तक्रीबन.....

मुकम्मल पता.....

बैराक नम्बर..... बोर्ड/सर्कल..... जेल/शहर.....

आप ने फ़िक्रे मदीना (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाना पुरी करने) के लिये कौन सा बक्त मुकर्रर फ़रमाया है ?

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

كتبة العلامة

Mo.091 93271 68200

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net